पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Claas-V

Hindi

Specimen copy

Year- 2021-22

Semester- 1

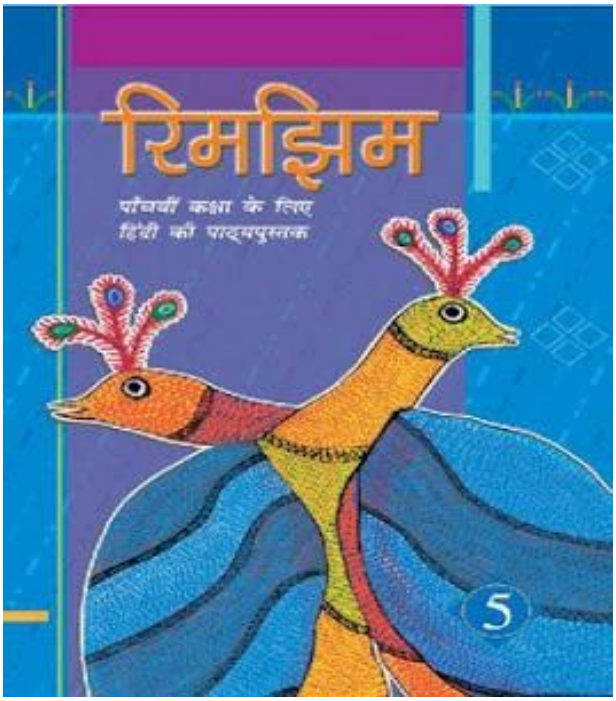

अनुक्रमणिका

अध्याय ३	जुन	➢ कविता :३ खिलौनेवाला ➢ व्याकरणःलिंग ➢ लेखन विभागःचित्र लेखन ➢ गतिविधिया	सुभद्रा कुमारा चौहान
अध्याय ४	जुन	➢ पाठ४ःनन्हा फनकार ➢ व्याकरणःवचन ➢ लेखन विभागःनिबंध ➢ गतिविधिया	
अध्याय ५	जुलाई	➢ पाठः५ जहां चाह वहाँ राह ➢ व्याकरणःकारक ➢ लेखन विभागःकहानी ➢ गतिविधिया	
अध्याय ६	जुलाई	➢ पाठः६ चिट्ठी का सफर ➢ व्याकरणःकिया ➢ लेखन विभागःनिबंध ➢ गतिविधिया	
अध्याय ७	अगस्त	➢ पाठः७ डाकिए की कहानी, कवरसिंह की जुबानी ➢ व्याकरणःभाषा, विशेषण ➢ लेखन विभागःपत्र ➢ गतिविधिया	प्रतिमा शर्मा

पाठ : ३
खिलौनेवाला
लेखकः सुभद्रा कुमारीचौहान

पाठ का सार : बालक अपनी माँ से कहता है क आज फर खलौनेवाला तरह-तरह के खलौने लेकर आया है। उसके पास पंजड़े में हरा-हरा तोता, गेंद, मोटरगाड़ी, गु ड़या आदि खलौने हैं। रेलगाड़ी चाबी भर देने पर चलने लगती है। खलौनेवाले के पास छोटे-छोटे धनुष-बाण भी हैं। वह जोर-जोर से आवाज दे रहा है ता क बच्चे उसके पास आएं और खलौने खरीदें। मुन्नू ने गु ड़या खरीदी है और मोहन ने मोटरगाडी। मुझे भी माँ से चार पैसे मले हैं। ले कन मैं अन्य बच्चों की तरह तोता, बिल्ली, मोटर आदि नहीं खरीदूंगा। मैं तो तलवार या तीर-कमान खरीदूंगा। फर मैं जंगल में जाकर राम की तरह कसी ताड़का को मार गराऊँगा। मैं राम बनूंगा

और माँ को कौशल्या बनाऊँगा। बालक माँ से कहता है क उसके आदेश पर वह हँसते-हँसते जंगल को चला जाएगा। ले कन बालक तुरंत चंतित हो उठता है। वह कहता है क हे माँ, मैं तुम्हारे बिना जंगल में कैसे रह पाऊँगा? वहाँ पर कससे रूढ़ेगा और कौन मुझे मनाएगा और गोद में बिठाकर चीजें देगा?

बालक अपनी माँ से कहता है क आज फर खलौनेवाला तरह-तरह के खलौने लेकर आया है। उसके पास पंजड़े में बंद हरा-हरा तोता है। उसके पास एक पैसे वाली छोटी-सी मोटर गाड़ी है। यह मोटर गाड़ी सर-सर-सर करके चलती जाती है।

बालक अपनी माँ से कहता है क आज फर खलौनेवाला सुन्दर-सुन्दर खलौने लेकर आया है। उसके पास कई तरह की सीटियाँ हैं, चाबी भर देने पर चलने वाली सुन्दर रेल है। जो गु ड़या उसके पास है वह कानों में बाली पहने हुए है। खलौनेवाला छोटा-सा गंटी सेट और छोटे-छोटे थाली-लोटा भी रखे हुए है।

बालक अपनी माँ से कहता है क आज फर खलौनेवाला तरह-तरह के खलौने लेकर आया है। खलौनेवाला ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा है क उसके पास नए-नए खलौने हैं। वह अन्य खलौने के साथ-साथ धनुष-बाण और तलवार भी बेच रहा है। मुन्नू ने गु ड़या खरीदी है और मोहन ने मोटरगाड़ी। सरला अपनी माँ से कहती है क वह खलौनेवाले से उसके लए साड़ी खरीद ढूं। इस पर बालक अपनी माँ से कहता है क क्या कभी खलौनेवाले सा ड़याँ भी रखते हैं? सा ड़याँ तो कपड़े बेचनेवाले रखते हैं जो कभी-कभी आते हैं।

बालक अपनी माँ से कहता है क खलौनेवाले के आने पर तुमने मुझे चार पैसे दे दिए। अब वह वचार कर रहा है क उसे कौन-सा खलौना खरीदना चाहिए। वह माँ से कहता है क वह भी इस बारे में वचार करे। अगर वह सोचती है क उसका बेटा अन्य बच्चों की तरह तोता, बिल्ली, मोटर या रेलगाड़ी खरीदेगा तो वह गलत सोचती है। उसका बेटा इन खलौनों को कभी नहीं लेगा। वह कहता है ये खलौने तो बच्चों के हैं। वह तो तलवार या तीर-कमान खरीदेगा और जंगल में जाकर राम की तरह कसी ताड़का को मार गराएगा।

बालक अपनी माँ से कहता है क वह खलौनेवाले से तलवार या तीर-कमान खरीदेगा और जंगल में जाकर राम की तरह कसी ताड़का को मारेगा। वह सभी असुरों को जंगल से मार भगाएगा ता क तपस्वीगण शांतिपूर्वक यज्ञ कर सकें। इस प्रकार से वह एक दिन रामचन्द्र बन जाएगा और उसकी माँ कौशल्या । अगर उसकी माँ उसे वन जाने का आदेश देगी तो वह खुशी-खुशी वन भी चला जाएगा। ले कन बालक शीघ्र ही दुखी हो जाता है। वह माँ से कहता है क वह जंगल में उसके (माँ के) बिना अकेले कैसे रहेगा। जंगल में वह कससे पैसे माँगेगा? कससे रूठेगा? कौन उसे मनाएगा और गोद में बैठाकर अच्छी-अच्छी चीजें देगा?

कठिन शब्दः

- पहिने
- मचल
- कमान
- ताड़का
- असुरों
- मनचाही
- मोटर
- तपसी
- गुडियाँ
- खिलौनेवाला
- अम्मा
- जंगल
- राम
- यज्ञ
- रुठूँगा
- गोद

शब्दार्थः

- पहिने-पहना
- पुकार-आवाज
- कमान-धनुष
- ताड़का-एक राक्षसी का नाम
- असुर-राक्षस
- वन-जंगल
- तपसी-तपस्या करने वाला
- मनचाहा-प्रिय
- चीज- वस्तु
- पुकारना-आवाज देना

निम्नलिखित प्रश्नों के वैकलिपक प्रश्न के उत्तर लिखिए।

१ : खिलौनेवाला तोता कैसा था?

उत्तरः (क) लाल-पीला (ख) हरा-हरा

(ग) सफेद-पीला (घ) पीला-पीला

२ : खिलौनेवाली गुडिया ने कानो मे क्या पहन रखा था?

उत्तरः (क) फूल (ख) मोतियाँ

(ग) बालियाँ (घ) इनमे से कोई नही

३ : तपस्वियो के यज्ञ मे किसने बाधाँ डाली है?

उत्तरः (क) देवताओ ने (ख) पशुओ ने

(ग) असुरो ने (घ) बालको ने

४ : बालक वन मे किसके बिना नही रह पाता?

उत्तरः **(क) माता के** (ख) खिलौने के

(ग) पैसे के (घ) तीर-कमान के

५ : बालक के अनुसार तोता, बिल्ली, मोटर, रेल किसके खिलौने है?

उत्तरः **(क) बच्चो के** (ख) बडो के

(ग) सरला के (घ) इनमे से कोई नही

निम्नलिखित प्रश्नो के अतिलघु उत्तर लिखिए।

१-खिलौने वाली मोटरगाड़ी कैसी थी?

उत्तर-खिलौने वाली मोटरगाड़ी सर-सर-सर चलने वाली थी।

२-खिलौनेवाला क्या कहकर खिलौने बेच रहा था?

उत्तर-खिलौनेवाला "नए खिलौने ले लो भैया"कहकर खिलौने बेच रहा था।

३-मुन्नू व मोहन ने क्या-क्या खरीदा था?

उत्तर-मुन्नू ने गुड़िया और मोहन ने मोटरगाड़ी खरीदा था।

४-ताड़का का वध किसने किया था?

उत्तर-ताड़का का वध श्रीराम ने किया था।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१-खिलौने वाली रेल की कौन-कौन सी विशेषताएँ थीं?

उत्तर-खिलौने वाली रेल चाभी भर देने से भक-भक करती चलने वाली थी।

२-खिलौने वाले के पास कौन-कौन से खिलौने थे?

उत्तर-खिलौने वाले के पास तोता, गेंद, मोटरगाड़ी, रेल, गुड़िया, टी-सेट, लोटा-थाली, धनुष-बाण, तलवार थे।

३-सरला की कौन-सी इच्छा पूरी न हो सकी और क्यों?

उत्तर-सरला की साड़ी लेने की इच्छा पूरी न हो सकी क्योंकि उसके पास केवल चार पैसे थे।

४-बालक आज्ञाकारी पुत्र है।कविता के आधार परसिदध कीजिए।

उत्तर-बालक अपनी माँकी हर बात मानता है इस तरह बालक आज्ञाकारी पुत्र हैं।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : खिलौने वाले के पिजड़े मे शेर बंद था। (गलत)
२ : खिलौने वाले के पास छोटी - छोटी तलवारे थी। (सही)
३ : खिलौने वाले साड़ी नही बेचता था। (सही)
४ : बालक के रुठने पर उसकी माँ उसे नही मनाती थी। (गलत)
५ : माँ बालक को मनचाही चीजें देती थी। (सही)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : खिलौने वाले की गेंद एक पैसे की थी।
२ : खिलौने वाले के पास कई प्रकार की सीटियाँ थी।
३ : कपड़े वाला कभी-कभी साडी दे जाता था।
४ : बालक अपनी माता को कौशल्या बनाना चाहता था।

व्याकरण विभाग
लिंग

शब्द के जिस रुप से पुरुष जाति या स्त्री जाति का बोध होता हो उसे लिंग कहते है।

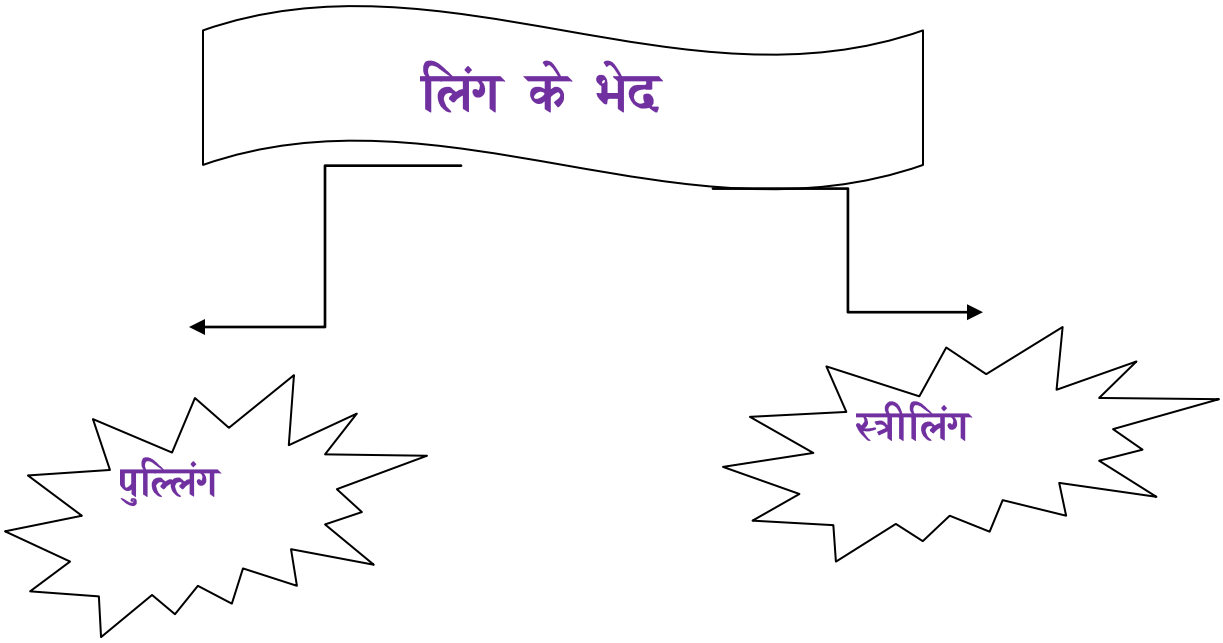

पुल्लिंग :शब्द के जिस रुप से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते है।

पुल्लिंग शब्द की पहचान : पुल्लिंग शब्द के अन्दर देश, ग्रह, द्वीप, सागर, पर्वत, समय, दिन, महीने, अनाज रत्न, धातु वर्णमाला के अक्षर, पदार्थ, शरीर के अंग ये सब सदा पुल्लिंग मे होते है।

उदाहरण :

बाजार चलते ह, मुझे **सुनार** से कुछ **आभूषण** बनवाने है।

नही, आज मुझे सभा मे जाना है, वहाँ **लेखक, कवि, विद्वान** और **शिक्षक** आ रहे है।

स्त्रीलिंग : शब्द के जिस रुप से स्त्रीजाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते है।

स्त्रीलिंगशब्द की पहचान : नक्षत्र, नदी, बोली, भाषा, तिथी, भोजन, कुछ मसाले, आभूषण और परिधान के नाम और शरीर के अंगो के नाम सदा स्त्रीलिग मे होते है।

उदाहरण :

माँ, हमने पुस्तक मेले मे **लेखिकाओ, कवयित्रियो** और **विदुषी**

लेखन विभाग
चित्र लेखन

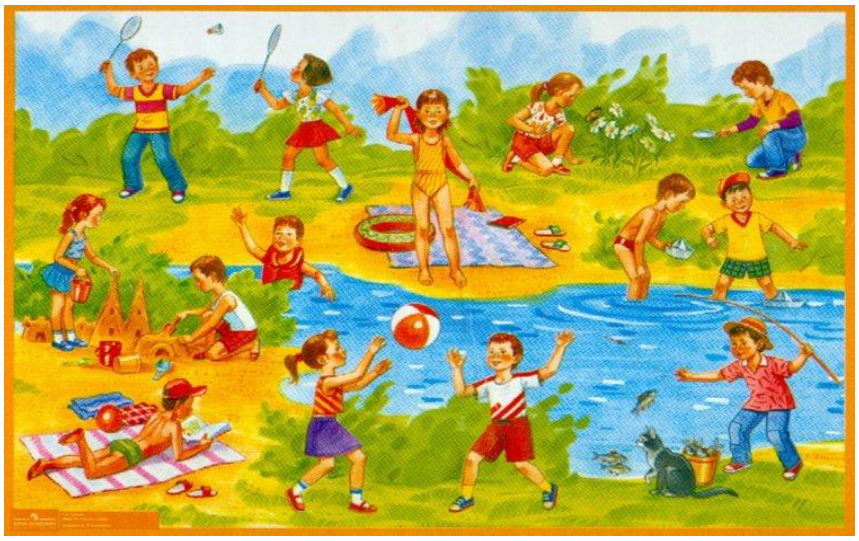

प्र-यह चित्र कहाँ का है?

उत्तर- यह चित्र तालाब के किनारे का है।

प्र- तालाब के किनारे बच्चे क्या कर रहे है?

उत्तर- तालाब के किनारे बच्चे खेल रहे है।

प्र-तीन बच्चे नदी मे क्या कर रहे है?

उत्तर- तीन बच्चे नदी मे नह रहे है।

प्र-रेती का घर कितने बच्चे बना रहे है।

उत्तर- रेती का घर दो बच्चे बना रहे है।

प्र-तालाब के किनारे किसके पौधे है?

उत्तर-तालाब के किनारे फूलो के पौधे है।

चित्र लेखन

प्र–यह चित्र कहाँ का है?

उत्तर–यह चित्र बगीचे का है।

प्र– बच्चे बगीचे मे क्या कर रहे है?

उत्तर–बच्चे बगीचे मे खेल रहे है।

प्र–बगीचे मे कितने पेड़ है

उत्तर–बगीचे मे १६ पेड़ है।

प्र–बगीचे के किनारे क्या है?

उत्तर–बगीचे के किनारे एक मंदिर है।

प्र–बगीचे के दुसरे छोर पर क्या है?

उत्तर–बगीचे के दुसरे छोर पर कुछ मकान है।

प्रवृत्तिः खिलौनेवाले का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।

पाठ :४

नन्हा फनकार

पाठ का सार : दस साल का नन्हा केशव अपने पता की तरह पत्थर पर छेनी-हथौड़े से नक्काशी का काम करता था। दरअसल केशव अभी काम सीख रहा था। पता के एक बार करके दिखा देने पर वह सीधी लकीरों वाले और घुमावदार डज़ाइन उकेर सकता था। पर उसे घंटियाँ बनाना ज्यादा मुश्किल लगता था। वह होनहार बालक था। उसे पूरी तरह वश्वास था क एक दिन वह अपने पता की तरह बारीक जा लयाँ, महीन-नफीस बेल बूटे, कमल के फूल, लहराते हुए साँप और इठलाकर चलते हुए घोड़े पत्थर पर उकेर पाने में अवश्य सफल होगा।

केशव के जन्म के पहले ही उसके माता- पता गुजरात से आगरा में आकर बस गए थे। बादशाह अकबर उस समय आगरे का कला बनवा रहे थे और केशव के पता को यहीं काम मल गया था। केशव का जन्म आगरे में ही हुआ था। ले कन अब वह सीकरी में रहता है।

एक दिन जब वह अपने काम में लगा था एक आदमी, जो वास्तव में बादशाह अकबर थे, उसके पास आकर खड़ा हो गया और उसके द्वारा बनाई हुई घंटियों की बड़ाई करने लगा। वह सफेद अँगरखा और पाजामा पहने हुए था। उसके लंबे बाल गहरे लाल रंग की पगड़ी में अच्छी तरह से ढंके हुए थे। केशव उसे पहचाना नहीं ले कन इतना वह जरूर समझ गया क वह कोई बड़ा आदमी है। अभी केशव उस आदमी के व्यक्तित्व का मुआयना कर ही रहा था क तभी एक पहरेदार ने आकर उसे सावधान कया क जो आदमी उसके सामने खड़ा है वह बादशाह अकबर हैं और वह उनसे काफी अदब से खड़े होकर बात करे।।

केशव हक्का-बक्का रह गया। बदहवासी में छेनी उसके हाथ से छूटकर नीचे गर गई और वह जल्दी से उठकर खड़ा हो गया। उसने बादशाह को झुककर सलाम कया। उसका दिल धक-धक कर रहा था। ले कन बादशाह की मुस्कुराहट देखकर वह बहुत जल्दी भयमुक्त हो गया।

अकबर ने केशव के सामने नक्काशी सीखने की इच्छा प्रकट की। केशव तुरंत छेनी-हथौड़ा लाया और बादशाह को उनसे काम करना सखाने लगा। बादशाह उसके पास जमीन पर बैठ गए। केशव ने कोयले के टुकड़े से पत्थर पर लकीरें खींचकर एक आसान-सा नमूना बनाया और उसे बादशाह को ध्यान से तराशने के लए कहा। अकबर ने पत्थर पर छेनी रखी और जोर से हथौड़े से वार कया, जिससे कटाव बहुत गहरा हो गया। केशव ने तुरंत गलती पकड़ी और बादशाह को हिदायत दी क वे हथौड़े को आहिस्ता से मारे। इस समय वह बिल्कुल भूल गया था क उसकी बगल में बैठा व्यक्ति हिंदुस्तान का बादशाह है। एक अनाड़ी से वयस्क पर अपने काम की धाक जमाने में उसे मजा आ रहा था। लकीरें उकेरते। समय अगर बादशाह से थोड़ी भी गलती हो जाती तो उसे गुस्सा आ जाता।

केशव के काम करने के अंदाज को देखकर अकबर ने धीमे से कहा, ढ़केशव, देखना, एक दिन तुम बड़े फुनकार बनोगे। हो सकता है एक दिन तुम मेरे कारखाने में काम करो।ञ नन्हा केशव कारखाने वाली बात समझ न सका। फर अकबर ने उसे बताया क महल तैयार हो जाने के बाद जब लोग आगरा में आकर रहने लगेंगे, तब वे एक कारखाना बनवाएंगे। इस कारखाने में सल्तनत के सबसे बढ़िया फ़नकार और शल्पकार

काम करेंगे। यह सुनकर लड़के का चेहरा चमक उठा। उसे भरोसा हो गया क जब कारखाना खुलेगा तब उसे काम अवश्य मलेगा।

रात हो गई। केशव धीरे-से अपने पता के बिस्तर में घुस गया और पूछ बैठा, बादशाह के पास आगरा में एक से बढ़कर एक खूबसूरत महल हैं। फर वे सीकरी में यह शहर क्यों बनवा रहे हैं?ञ पता ने उसे बताया क जब बादशाह की कोई संतान नहीं थी तब वे सीकरी में ख्वाजा सलीम चश्ती के पास आए थे। उनके आशीर्वाद से बादशाह को तीन-तीन संतानें हुईं-शाहज़ादा सलीम, मुराद और दनियाल । फर उन्होंने ख्वाजा सलीम चश्ती के सम्मान में सीकरी में नगर बसा दिया। इतना ही नहीं उन्होंने अपने एक बेटे का नाम भी सलीम रख दिया।

कठिन शब्दः

- चौकोर
- पत्थर
- घंटी
- बादशाह
- किला
- हिस्सा
- नक्काशी
- कारखाना
- फनकार
- शिल्पकार
- मुस्कुराना

शब्दार्थः

- फुनकार-कलाकार
- बुदबुदाई-धीरे से बोलना
- उकेरना-उतारना
- संगतराश-साथ में काम करने वाले
- पुश्तैनी-खानदानी
- आहट-आवाज
- तल्खी से-तपाक से
- घूरते हुए-देखते हुए
- जुर्रत-साहस
- बदहवासी-घबराहट
- दखलंदाजी-बीच में आ पड़ना या बोल पड़ना
- खीझकर- खन्न होकर
- अनमने भाव से-अनिच्छा से
- त्यौरियाँ चढ़ जाती-गुस्सा आ जाना
- कौतूहल-जिज्ञासा
- नेक-अच्छा
- लाडला-प्यारा

निम्नलिखित प्रश्नों के वैकल्पिक प्रश्न के उत्तर लिखिए।

१ : केशव कितने साल का था?

उत्तरः (क) पाँच (ख) सात

(ग) प्रंद्रह **(घ) दस**

२ : अकबर के गले मे कैसी माला थी?

उत्तरः (क) **बडे-बडे मोतियो वाली** (ख) सोने की

(ग) हीरे की (घ) तुलसी की

३ : केशव को बादशाह अकबर के लिए किस चीज की व्यवस्था करनी पडी?

उत्तरः (क) पगडी की (ख) पत्थर की

(ग) **छेनी- हथौडे की** (घ) पान की

४ : केशव अपने पिता को क्या कहकर संबोधित करता था?

उत्तरः (क) अब्बा **(ख) बाबा**

(ग) पिताजी (घ) बाबुजी

५ : अकबर को केशव मे क्या बनने की प्रतिभा नजर आई?

उत्तरः (क) बादशाह **(ख) फनकार**

(ग) व्यापारी (घ) मंत्री

निम्नलिखित प्रश्नो के अतिलघु उत्तर लिखिए।

१-केशव द्वारा किए गए नक्काशीकेकार्यो में सर्वाधिक कठिनकार्य क्या था?

उत्तर-केशव द्वारा किए गए नक्काशी के कार्यो में घंटियों को बनाना ही सबसे ज़्यादा मुश्किल था।

२-केशव मूल रुप से कहाँ का रहने वाला था?

उत्तर-केशव मूल रुप से आगरा का रहने वाला था।

३-बादशाह अकबर ने सिर पर क्या धारण कर रखा था?

उत्तर-बादशाह अकबर ने ने सिर पर लाल रंग की पगड़ी धारण कर रखी थी।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१-केशव अपनी आँखे कब,किस कारण से सिकोड़ लेता था?

उ-हथौड़े के वार से पत्थर पर जो कटाव उभरता उससे पत्थर की किरचें छितरा जातीं और वह आँखे सिकोड़ लेता।

२-केशव किसके कदमों की आहट से अनजान था औरक्यों?

उ-केशव बादशाह अकबर की आहट से अनजान था क्योंकि चारों ओर हो रही छेनी-हथौड़ो की ठक-ठक,खड़-खड़ के बीच केशव को किसी के कदमों की आहट भी न सुनाई पड़ी।

३-पहरेदार के जाने के बाद केशव किस दुविधा में था?

उ-पहरेदार के जाने के बाद केशव असमंजस में था कि उसे क्या करना चाहिए।वापस अपना नक्काशी का कामशुरु करे या बादशाह के हुक्म के इंतजार में खडा रहे।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।-

१-केशव कौन था? उसने अपने बारे में क्या भविष्यवाणी कर रखी थी?

उ-केशव दस साल का लड़का था।उसे विश्वास था कि एक दिन वह भी अपने पिता की तरह सुंदर ड़िजाइन पत्थर पर उकेरने में सफ़ल होगा।

२-पहरेदार की कौन-सी दखल अंदाजी अकबर को पंसद नहीं आई और क्यों?

उ-बादशाह अकबर चाहते थे कि केशव उन्हें एक साधारण व्यक्ति समझकर ही उनसे बातें करे।उन्हे अपना व अपने नक्काशी के हुनर के बारे में बताए। अकबर को उससे बातें करने में आनंद आ रहा था इसलिए उन्हें पहरेदार की दखल अंदाजी अच्छी नहीं लगी।

३-केशव ने अकबर की गलती को किस प्रकार पकड़ा? बादशाह से चूक हो जाने पर केशव की क्या प्रतिक्रिया होती थी?

उ-अकबर ने पत्थर पे छेनी रखकरजोर से हथौड़े पर वार किया,जिससे कटाव ज्यादा गहरा हो गया। केशव ने तुरंत गलती पकड़ी। बादशाह से चूक हो जाने परकेशव बादशाह को हल्के हाथ से वार करने को कहता।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : केशव के जन्म के बाद उसके माता-पिता आगरा आकर बस गए थे। (गलत)
२ : बादशाह की जरा सी चूक पर केशव की त्यौरियाँ चढ़ जाती थी। (सही)
३ : अकबर सीकरी मे एक कारखाना स्थापित करना चाहते थे। (सही)
४ : बादशाह ने केशव से दोबारा मिलने की बात नही स्वीकार की । (गलत)
५ : अकबर ने अपनी एक संतान का नाम फकीर ख्वाजा सलीम चिश्ती के नाम पर रखा था। (सही)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : बालक **अधबनी** अधूरी धंटी पर नक्काशी कर रहा था।
२ : **बदहवासी** मे केशव के हाथ से छूटकर छेनी नीचे गिर गई।
३ : बादशाह **दोस्ताना** अंदाज मे केशव के पास जमीन पर बैठ गए।
४ : केशव पत्थर पर नमूने को तराशने के साथ-साथ अपनी तरफ से उनसे कुछ **जोड** भी रहा था।
५ : बादशाह ख्वाजा सलीम चिश्ती से मिलने के लिए **सीकरी** गए थे।

पर्यायवाची शब्द	विलोम शब्द
आँख-नेत्र, नयन, चक्षु	आशा×निराशा
सूर्य-सूरज, रवि, भानु	ज्ञान×अज्ञान
पृथ्वी-भू, अवनी, धरती	उदय×अस्त
पुत्र-बेटा, सत, नंदन	दयालु×निर्दय
सुंगध-महक, खुशबू, गंध	क्षमा×दंड

इच्छा-चाह, कामना, अभिलाषा
नदी-सरिता, तटनी
पेड़-तरु, वृक्ष, पादप

मित्रxशत्रु
धनीxनिर्धन
बहुतxथोड़ा

व्याकरण विभाग
वचन

वचनः शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते है। वचन का अर्थ होता है-संख्या बताने वालां

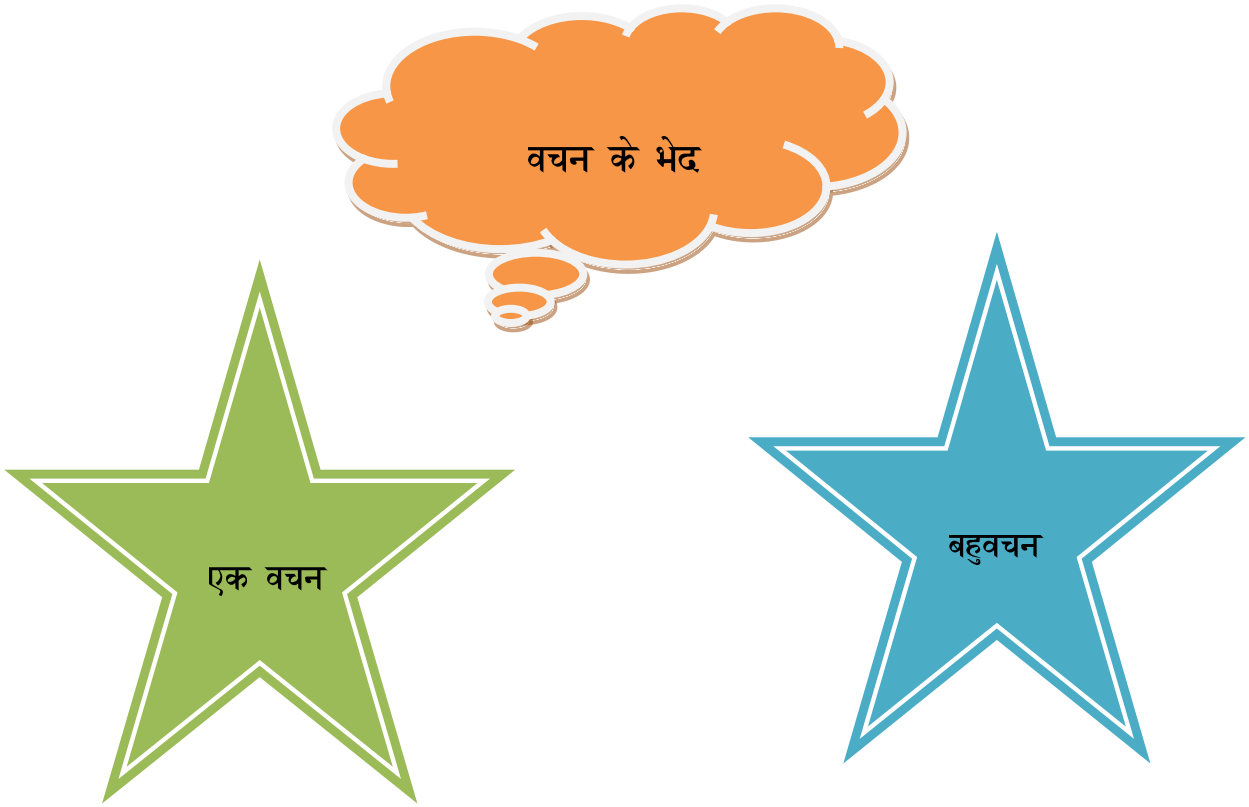

एकवचन : शब्द का वह रूप जो एक प्राणी ,एक वस्तु अथवा एक पदार्थ का बोध कराता है, उसे एक वचन कहते है।

उदाहरण :

- लडकी सो रही है।
- नदी बह रही है।
- मानसी ने माला पहनी है।
- मा कहानी सुना रही है।
- हाथी गन्ना खा रहा है।

- **बच्चा** खेल रहा है।

बहुवचन : शब्द का वह रूप जो एक से अधिक प्राणी, वस्तुओ अथवा पदार्थो का बोध कराता है उसे **बहुवचन** कहते है।

उदाहरण :

- **लड़किया** सो रही है।
- **नदियाँ** बह रही है।
- मानसी ने **मालाए** खरीदी है।
- **बच्चे** खेल रहे है।
- हाथी **गन्न** खा रहा है।
- माँ **कहानियाँ** सुना रही है।

लेखन विभाग

वर्षा ऋतु का महत्व

वर्षा ऋतु को सभी ऋतुओं का रानी कहा जाता है। भारत में चार मुख्य ऋतुओं में वर्षा ऋतु एक है। यह हर साल गरमी के मौसम के बाद जुलाई से शुरु होकर सतंबर तक रहता है। जब मानसून आता है तो आकाश के बादल बरसते है । गर्मी के मौसम में तापमान अ धक होने के कारण पानी के संसाधन जैसे महासागर, नदी आदि वाष्प के रुप में बादल बन जाते है।

वाष्प आकाश में इक ा होती है और बादल बन जाते है जो वर्षा ऋतु में चलते है जब मानसून बहता है और बादल आपस में घर्षण करते है। इससे बिजली चमकती और गरजती है और फर बारिश होती है।ग्रीष्म ऋतु संपूर्ण जगत को शुष्क बना डालती है । गर्मी के कारण खेतों की हरियाली खत्म हो जाती है चारों तरफ़ उजाड़-सा नज़र आने लगता है ।

पशु-पक्षी सभी गर्मी के कारण व्याकुल नज़र आते हैं । इसी व्याकुलता को मटाने के लए वर्षा ऋतु आती है । वर्षा ऋतु सभी ऋतुओ में प्रधान मानी जाती है, क्यों क भारत एक कृ ष-प्रधान देश है । कृ ष की सफलता और वफलता वर्षा पर ही निर्भर करती है ।

भारत की छह ऋतुओं में वर्षा ऋतु का अपना अलग महत्व है । ग्रीष्म की तपन से मुक्ति पाने से वर्षा का आगमन बड़ा सुखद लगता है । इस ऋतु में चारों तरफ़ हरियाली नज़र आती है । नदी-नाले सभी पानी से भर जाते हैं कहीं मेंढक टर्र-टर्र की आवाज़ करते हैं तो कहीं झींगुर की झंकार सुनाई देती है ।

आकाश में काले-काले बादलों को देखकर मयूर नृत्य करने लगते हैं । इस ऋतु में इंद्रधनुष की शोभा बहुत ही निराली होती है । कसान अपनी खेती में जुट जाते हैं ।इस ऋतु में हम लोग कई त्यौहार भी मनाते हैं, जैसे-- रक्षाबंधन, जन्माष्टमी तथा स्वतंत्रता दिवस । वर्षा ऋतु का उल्लास ग्रामीण युवतियों के झूला झूलने तथा गीत गाने में झलकता है । यह ऋतु हमें जीवन का सौंदर्य तथा कर्म की प्रेरणा भी देती है ।

वर्षा ऋतु से जहाँ अनेक लाभ है वहाँ हानियाँ भी कम नहीं है । जहाँ-तहाँ पानी के जमाव से मच्छर उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे मलेरिया जैसे घातक रोग फैल जाते हैं । चारों और कीचड़ के कारण कहीं भी आना-जाना कठिन प्रतीत होने लगता है । बाढ़ के कारण गाँव-के-गाँव नष्ट हो जाते हैं । कतने मकान गर जाते हैं । कई तरह के कीड़े-मकोड़े नज़र आने लगते हैं । इतनी सारी हानियों के बावजूद भी वर्षा ऋतु जीवनदायिनी तथा जीवन के लए एक वरदान है । इस लए वर्षा ऋतु को ' ऋतुओं की रानी ' कहा गया है ।ऋतु के आने से पर्यावरण की सुंदरता बढ़ जाती है।

प्रवृत्तिः- बादशाह अकबर का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।

पाठः५

जहाँ चाह वहाँ राह

पाठ का सार : इला सचानी छब्बीस साल की हैं। वह गुजरात के सूरत जिले में रहती हैं। वे अपंग हैं। उनके हाथ काम नहीं करते। ले कन इससे इला जरा भी निरुत्साहित नहीं हुईं। उसने अपने हाथों की इस कमी को तहे-दिल से स्वीकार करते हुए अपने पैरों से काम करना सीखा। दाल-भात खाना। दूसरों के बाल बनाना, फर्श बुहारना, कपड़े धोना, तरकारी काटना, तख्ती पर लखना जैसे काम उसने पैरों से करना सीखा। उसने एक स्कूल में दा खला ले लया। पहले तो सभी उसकी सुरक्षा और उसके काम की गति को लेकर काफी चंतित थे। ले कन जिस फुर्ती से इला कोई काम करती थी, उसे देखकर सभी हैरान रह जाते थे। कभी-कभी कसी काम में परेशानी जरूर आती थी ले कन इला इन परेशानियों के आगे झुकने वाली नहीं थी। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की परन्तु दसवीं की परीक्षा पास नहीं कर पाई क्यों क वह दिए गए समय में लखने का काम पूरा नहीं कर पाई। समय रहते अगर उसे यह मालूम हो जाता क उसे ऐसे व्यक्ति की सु वधा मल सकती थी जो परीक्षा में उसके लए लखने का काम कर सके तो शायद उसे परीक्षा में असफलता का मुँह नहीं देखना पड़ता। उसे इस बात का बेहद दुःख है।

इला की माँ और दादी कशीदाकारी करती थीं। वह उन्हें सुई में रेशम परोने से लेकर बूटियाँ उकेरते हुए देखती। और एक दिन उसने कशीदाकारी करने की ठान ली, वह भी पैरों से। दोनों अंगूठों के बीच सुई थामकर कच्चा रेशम परोने जैसा कठिन कार्य उसने काफी धैर्य और वश्वास से करना शुरू कया। पन्द्रह-सोलह साल के होते-होते इला काठियावाड़ी कशीदाकारी में माहिर हो चुकी थी। कस वस्त्र पर कस तरह के नमूने बनाए जाएँ, कौन-से रंगों से नमूना खल उठेगा और टाँके कौन-से लगें, गें, यह सब वह अच्छी तरह समझ गई थी। और बहुत जल्दी उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों की गी। इन परिधानों में काठियावाड के साथ-साथ लखनऊ और बंगाल की भी झलक थी। उसने पत्तियों को चकनकारी से सजाया था। डं डयों को कांथा से उभारा था। प्रदर्शनी में आए लोगों ने उसकी कला को काफी सराहा। इस प्रकार इला 'जहाँ चाह वहाँ राह' जैसी उक्ति को शत-प्रतिशत चरितार्थ करती है। वह सबके लए प्रेरणा की स्रोत है।

कठिन शब्दः

- टाँका
- अनुठी
- मिसाल
- घुटने टेकना
- माहिर
- परिधान
- प्रदर्शनी
- तरकारी

शब्दार्थः

- टाँका-हाथ की सलाई
- अनूठी-अभुत
- मसाल-उदाहरण
- वष-जहर
- घुटने टेकना-झुकना
- कुदरत-प्रकृति
- माहिर-अव्वल
- परिधानों की-पोशाकों की, वस्त्रों की

- इस्तेमाल-प्रयोग
- नवीनता-नयापन
- अनूठा-बे मशाल।

निम्नलिखित प्रश्नों के वैकलिपक प्रश्न के उत्तर लिखिए।

१ : इला की हिम्मत की अनुठी मिशाल क्या है?

उत्तरः (क) रेशमी वस्त्र (ख) तरकारी काटना

(ग) मधुर संगीत **(घ) कढ़ाई के नमूने**

२ : इला किस कार्य मे बच्चो के साथ देती थी?

उत्तरः (क) पंगत उडाने मे (ख) झूला झूलने मे

(ग) गाना गाने मे (घ) इनमे से कोई नही

३ : इला ने किस कक्षा तक पढ़ाई की थी?

उत्तरः **(क) नौवी तक** (ख)दसवी तक

(ग) पाँचबी तक (घ) बारहवी तक

४ : इला ने कशीदाकारी की प्रेरणा किनसे पाई थी?

उत्तरः **(क) दादी और माँ से** (ख) नानी और मम्मी से

(ग) दीदी से (घ) शिक्षिका से

निम्नलिखित प्रश्नो के अतिलघु उत्तर लिखिए।

१-खेल से मन भर जाने पर बच्चे क्या करते थे?

उ-खेल से मन भर जाने पर बच्चे पेड़ की ड़ालियों पर झूला झूलते थे।

२-बच्चों के साथ कभी-कभार इला किस खेल में शामिल हो जाती थी?

उ-बच्चों के साथ कभी-कभार इला पकड़म-पकड़ाई और विष-अमृत केखेल में शामिल जाती थी।

३-इला 15-16 वर्ष की होते होत किस कशीदाकारी में दक्ष हो गई थी?

उ-इला 15-16 वर्ष कीहोते होते काठियावाड़ी कशीदाकारी में दक्ष हो गई थी।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१-बच्चों के साथ खेलते समय इला धप्पा क्यों नहीं कर पाती थी?

उ-बच्चों के साथ खेलते समय इला धप्पा नहीं कर पाती थी क्योंकि उसके हाथ ही नहीं उठते थे।

२-इला को स्कूल में आसानी से दाखिलाक्यों न मिल सका?

उ- -इला को स्कूल में आसानी से दाखिला न मिल सका क्योंकि कहीं ते उसकी सुरक्षा को लेकर चिंता थी, कहीं उसकीकामकरनेकी गति को लेकर।

३-"इला के पाँव अब थकत नहीं थे।"पंक्ति का आशयस्पष्ट कीजिए।

उ-पारंपरिक ड़िज़ाइनों में इला माहिर हो चुकी थी इस तरह कह सकते है कि इला के पाँव अब थकते नहीं थे।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।-

१-इला अपने मित्रों के साथ खेलकूद में पूर्णतः शामिल होने में स्वयं को किस प्रकार विवशपाती थी?

उ-इला अपने मित्रों के साथ गाना गाने में साथ तो दे पाती थी,परंतु जब धप्पा करने की बारी आती तो हाथ न होने के कारण वो धप्पा न कर पाती थी। इस प्रकार इला अपने मित्रों के साथ खेलकूद में पूर्णतःशामिल होने में स्वयं को विवश पाती थी।

२-दसवीं की परीक्षा देने में इला को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा? अतः परिणाम क्या निकला?

उ-दसवीं की परीक्षा जब देने की बारी आयी तब इला के हाथ न होने के कारण वो परीक्षा में लिख न पाई। इला को ये न पता था कि उसकी जगह कोई और परीक्षा में लिख सकता था। इस तरह हाथ न होने के कारण इला दसवीं की परीक्षा पास न कर पाई।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : इला का निवास गुजरात मे था। (सही)
२ : इला पेगे लेने मे बच्चो का साथ नही दे पाती थी। (सही)
३ : बच्चे इला के साथ खेलनख नही चाहते थे। (गलत)
४ : दसवी की परिक्षा मे इला के स्थान पर कोई और लिख सकता था। (सही)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : इला ने मलमल के पल्लू पर **भरवाँ** टाँके लगाए थे।
२ : इला का ननिहाल **अमरेली** जिले के राजकोट गाँव मे था।
३ : इला ने अपने पैरो से **तख्ती** पर लिखना भी सीखा था।
४ : इला के विश्वास और धैर्य ने **कुदरत** को भी झुठला दिया।

व्याकरण विभाग

कारक

कारकः संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से क्रिया तथा वाक्य के अनय शब्दो के साथ संबंध ज्ञात हो उसे कारक कहते है।

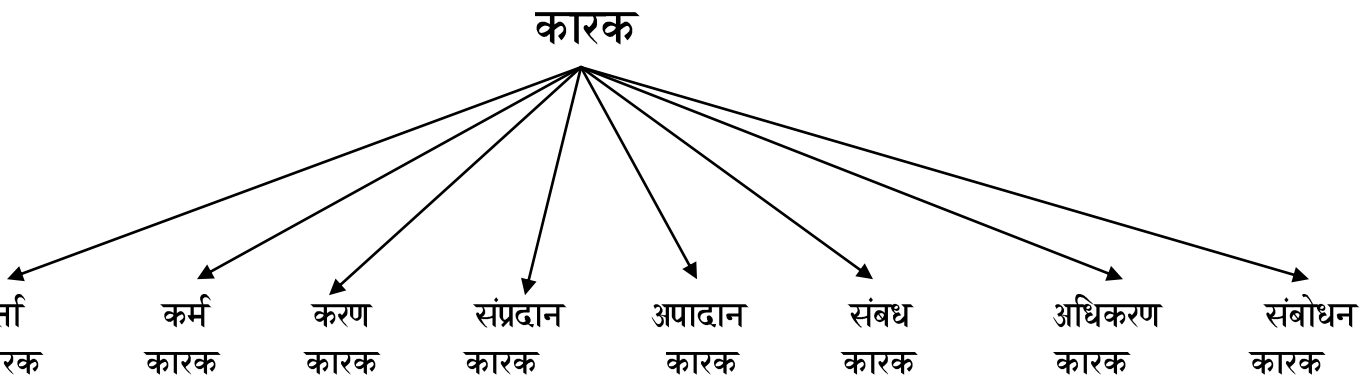

कारक	कारक चिहंन	पहचान
कर्ता	ने	किसने, कौन, किससे
कर्म	को	कहाँ, किसको, क्या
करण	से, के द्वारा	किससे, किसके, साथ, किसके द्वारा
संप्रदान	को, के लिए , हेतु	किसको, किसके लिए, किस हेतु
अपादान	से(अलग होने के अर्थमे)	क्हाँ से, किससे
संबंध	का, के, की, रा, रे, री	किसका, किसके, किसकी, किसने
अधिकरण	मे, पर	कहाँ, किसमे, किस पर
संबोधन	हे, अरे, ओ	----------

- **कर्ता कारक** : शब्द के जिस रुप से क्रिया के करने वाले का बोध हो ,उसे कर्ता कारक कहते है।

उदाहरण : गरिमा ने मधुर गीत गाया।
सुधा ने स्वादिश्रट खीर पकाई।
नीरा बाजार जा रही है।
अमित कार चलाता है।
घर का सारा काम सीमा द्वारा किया गया।

- **कर्म कारक** : शब्द के जिस रुप पर क्रिया का फल पडे,उसे कर्म कारक कहते है।

उदाहरण : अध्यापिका छात्रो को पढ़ा रही है।
नीतू कपडे सुखा रही है।
डाकिये ने हीना को पत्र दिया।
छात्रा उत्तर लिख रही है।

- **करण कारक** :कर्ता जिस साधन या माध्यम से कार्य करता है,उस साधन या माध्यम को करण कारक कहते है।

उदाहरण : माँ करछी से दाल डाल रही है।
अध्यापिका ने कलम के द्वारा हस्ताक्षर किए।
बच्चे दादाजी के साथ खेल रहे है।
मुझे रेलगाडी से पठानकोट जाना है।
हेमत ने राष्ट्रपति के हाथो पुरस्कार पाया।

- **संप्रदान कारक** :जहाँ कर्ता जिसके लिए कार्य करता है या जिसे कुछ होता है, उसे बताने वाले शब्द सप्रदान कारक कहलाते है।

उदाहरण : बाढ़-पीडीतो के लिए चंदा जमा किया गया।
विनय ने फीस माफी हेतु पत्र लिखा।
माँ ने सबको भोजन खिलाया।
जतिन नरेद्र के लिए उपहार लाया।

- अपादान कारक : जिस शब्द से संज्ञा और सर्वनाम से अलग होने ,दूरी बताने ,तुलना करने ,डरने,लजाने आदि के भाव का पता चलता है,उसे अपादान कहते है।

उदाहरण : पेड से सूखे पत्ते गिर रहे है।
ऋषभ खिडकी से बाहर देख रहा है।
मंयक आशिष से लंबा है।
खुशी साँप स डरती है।
करण दुकान से कपडे लाया।

- संबध कारक : जिस शब्द से दो संज्ञाओ अथवा सर्वनाम का आपसी संबंध ज्ञात होता है,वह संवंध कारक कहलाता है।

उदाहरण : हेमंत अपने भाई की मदद कर रहा है।
राजीव का बल्ला टूट गया।
कल अनिता की शादी है।
वरुणा दादाजी के साथ स्कूल गई।
यह संजू का घर है।

- अधिकरण कारक : संज्ञा के जिस रुप से किया के समय,स्थान,अवसर आदि का पता चलता है,उसे अधिकरण कारक कहते है।

उदाहरण :चाय मे चीनी कम है।
रक्षाबंधन पर बहने भाइयो को राखी बाँधती है।
छत पर सोनिया की कीताब रखी है।
पेड पर मैना बैठी है।
कुलफी मे पिस्ता-बादाम डाला जाता है।

- संबोधन कारक : जिन शब्दो का प्रयोग किसी को बुलाने या पुकारने अथवा संबोधन करने के लिए किया जाता है,वे संबोधन कारक कहलाते है। संबोधन कारक मे परसर्ग अरे, हे आदि होते है।

उदाहरण : ओ लडके ! जरा सुन तो।

अरे नमिता ! तुम कब आई?

लेखन विभाग

कहानी लेखन : मेहनत का धन

एक नगर में एक सन्यासी रहता था और वह एक धनवान कन्तु अहंकारी सेठ से परेशान था |जब सन्यासी भक्षा लेने जाता तो वह उस सन्यासी को देखकर कोई न कोई ताना जरुर मारता था. सन्यासी उस सेठ के तानो से इतना परेशान हो गया.

और उसका कोई उपाय ढूढने लगा और फर उसने भक्षा के लए जाते समय जब ताना मारता तो वह मन मारकर हँसता और आगे बढ़ जाता |

एक दिन सन्यासी ने अपने एक भक्त के सामने अपनी समस्या कही तो भक्त भी परेशान हो गया की संत का अपमान करना तो बहुत बड़ा पाप है फर सेठ रोजाना ही एसा करता है **?**

भक्त ने सोचना शुरू कया और वचार कया की सेठ के पास धन बहुत है और सन्यासी के पास कुछ भी नहीं है इस लए सेठ सन्यासी पर हँसता है अगर कसी युक्ति से सेठ का धन नाश हो जाये तो फर सेठ कभी एसा नहीं करेगा |

भक्त ने सन्यासी को कहा की कल जब आप भक्षा लेने जाओ और उस समय ताना मरे तो उनके पास जाना और कहना की जब आप हँसते है तो आपके घर में गडा धन और आगे थोडा दूर चला जाता है |

दुसरे दिन सन्यासी ने ठीक एसा ही कया तो सेठ के ललाट पर चंता का भाव आ गया और वो सन्यासी को पूछने लगा की धन को वापस करीब लेन के लए आप कोई उपाय बताये |

तो सन्यासी ने कहा की अपना सारा धन घर में एक खड्डा खोदकर उसमे डाल दो और ऊपर से मटटी भर दो और फर कभी उस धन के हाथ मत लगाना जब तक में न कहू |

सेठ ने ठीक एसा ही कया और अपना सारा धन गड्ढे में भर दिया अब उसके पास कुछ नहीं बचा था यहाँ तक की खाने के लए भी धन नहीं बचा तो वो फर सन्यासी के पास गया और पूछा की अब क्या करू खाने के भी लाले पड़े है तो सन्यासी ने कहा की कुछ ही दिन की बात है.

खूब मेहनत करो और अपना गुजारा करो और जब धन के पास धन आ जायेगा तो मैं बता दूंगा तो वह धन भी निकाल लेना |

समय गुजरता गया और सेठ ने फर से मेहनत करना शुरू कर दिया और मेहनत मजदूरी करके एक छोटा सा व्यापार कर लया उसमे उसको बहुत सफलता मली और वो फर से वेसा ही धनवान बन गया |

एक दिन जब सन्यासी उधर से निकला और उसने देखा की आज सेठ उसको देखकर हंस रहा है तो उसने इसका कारण पूछा तो सेठ ने कहा की पुराना धन मेरे को पता की सम्पति से मला था. इस लए वो मेरे को रोजाना ताना बोलने के लए मजबूर करता था और अब मेरे पास अपनी मेहनत का धन है इस लए ख़ुशी से हंसी और प्रसन्नता दे रहा है |

सन्यासी ने कहा की धन ही सब समस्या का कारण है जेसा धन होता है वेसा ही व्यक्ति का आचरण बन जाता है मेहनती का धन वनम्रता और शष्टाचार को सखाता है | अब सेठ ने सन्यासी का स्वागत कया और भक्षा देकर के ससमान वदा कया |

प्रवृत्तिः आप बड़े होकर जो बनना चाहते है उसका चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।

पाठ :६
चिटठी का सफ़र

पाठ का सार : पत्रों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पत्र लखने की परम्परा बहुत पुरानी है। पत्र जिसके पास लखा जा रहा है उस तक उ चत समय पर पहुँच जाए, इसके लए हम उस पर डाक टिकट लगाते हैं और पूरा एवं ठीक पता लखते हैं। फर पते में सबसे छोटी भौगो लक इकाई से शुरू करके बड़ी की ओर बढ़ते हैं। छोटी से बड़ी भौगो लक इकाई का मतलब है घर के नंबर के बाद गली-मोहल्ले का नाम, फर गाँव, कस्बे, शहर के जिस हिस्से में है उसका नाम, फर गाँव या शहर का नाम। शहर के नाम के बाद पनकोड लखा जाता है।

पनकोड लखने से गंतव्य स्थान का पता लगाने में डाक छाँटने वाले कर्मचारियों को मदद मलती है और पत्र जल्दी जल्दी बाँटे जा सकते हैं। पनकोड की शुरूआत 15 अगस्त 1972 को डाकतार वभाग ने पोस्टल नंबर योजना के नाम से की। ‘ पन’ शब्द पोस्टल इंडेक्स नंबर (Postal Index Number) का छोटा रूप है। कसी भी स्थान का पनकोड 6 अंकों का होता है। हर अंक का एक खास स्थानीय अर्थ है। उदाहरण के लए पनकोड 110016 लें। इसमें पहले स्थान पर दिया गया अंक यानि 1 यह बताता है क यह पनकोड दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब या जम्मू-कश्मीर का है। अगले दो अंक यानि 10 यह तय करते हैं क यह दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के उपक्षेत्र दिल्ली का कोड है। अगले तीन अंक 016 दिल्ली उपक्षेत्र के ऐसे डाकघर का कोड है जहाँ से डाक बाँटी जाती है।समय के साथ डाक सेवाओं में निरंतर बदलाव और वकास होता रहा है। पुराने समय में कबूतरों के द्वारा संदेश भेजे जाते थे। जब संचार और परिवहन के साधन बेहद सी मत थे तब हरकारे पैदल चलकर आम आदमी तक च ी-पत्री पहुँचाते थे। राजा-महाराजाओं के पास घुड़सवार हरकारे होते थे। इन हरकारों को न केवल हर तरह की जगहों पर पहुँचना होता था बल्कि डाकू, लुटेरों या जंगली जानवरों से डाक की रक्षा भी करनी होती थी। आज भी भारतीय डाकसेवा दुर्गम इलाकों तक डाक पहुँचाने के लए हरकारों पर निर्भर करती है। आजकल संदेश भेजने के नए-नए और तेज साधन उपलब्ध हैं जिसके परिणामस्वरूप डाक वभाग पत्र, मनीआर्डर, ई-मेल, बधाई कार्ड आदि लोगों तक पहुँचा रहा है।

यह सोचकर बड़ी हैरानी होती है क कबूतर जैसा पक्षी संदेशवाहक का काम कैसे करता होगा। दरअसल कबूतर की सभी प्रजातियाँ संदेश ले जाने का काम नहीं करती। केवल गरहबाज या हूमर नामक प्रजाति को ही प्र श क्षत करके डाक संदेश भेजने के काम में लाया जा सकता है। उड़ीसा पु लस आज भी हूमर कबूतरों का इस्तेमाल राज्य के कई दुर्गम इलाकों में संदेश पहुँचाने के लए कर रही है। कबूतरों की संदेश सेवा बहुत सस्ती है और उन पर खास खर्च नहीं आता है। इन कबूतरों का जीवन 15-20 साल होता है।

कठिन शब्दः

- भौगोलिक
- परिवहन
- संस्थान
- संचार
- दुर्गम
- प्रवासी
- ज़ाहिर
- सीमित
- प्रशक्षित
- उपलब्ध

शब्दार्थः

- निर्भर-आश्रित, टिका हुआ
- संकट-मुसीबत
- संस्थान-काम का स्थल
- ज़ाहिर-साफ़ करना, बताना
- प्रशिक्षित-जानकार
- सीमित-कम
- परिवहन-यातायात
- प्रवासी-दूसरे देश के लोग
- सफ़र-यात्रा
- गौर से-ध्यान से
- भौगो लक-भूगोल से संबं धत
- गंतव्य-पहुँचने का स्थान
- जाहिर है-स्पष्ट है
- निरंतर-लगातार
- बेहद-बहुते
- हरकारे-पैदल चलकर संदेश पहुँचाने वाले
- दुर्गम-कठिन
- दिलचस्प-मजेदार
- प्रजाति- कस्म
- प्र श क्षत-अच्छी तरह सीखे हुए
- प्रवासी-अपने देश या शहर से बाहर जाकर रहने वाले

निम्नलिखित प्रश्नों के वैकलिपक प्रश्न के उत्तर लिखिए।

१ : चिट्ठी के लिफाफे पर शहर के नाम के बाद क्या लिखा जाता है?

उत्तरः(क) फोन संख्या (ख) मकान संख्या

(ग) प्रेषक का नाम **(घ) पिनकोड**

२ : किसी भी स्थान का पिन कोड कितने अंको का होता है?

उत्तरः (क) आठ **(ख) छः**

(ग) दस (घ) पाँच

३ : किस राज्य की पुलिस

उत्तर : (क) बिहार (ख) बंगाल

(ग) उडीसा (घ) महाराष्ट

४ : हूमर कबूतर सामान्य रूप से कितने वर्षो तक जीते है?

उत्तरः (क) 8 से 10 वर्ष **(ख) 15 से 20 वर्ष**

(ग) 10 से 12 वर्ष (घ) 20 से 22 वर्ष

निम्नलिखित प्रश्नो के अतिलघु उत्तर लिखिए।

१-पिनकोड़ किसे कहते हैं?

उ-पिनकोड़ एक पोस्टल नम्बर होता है जो 6 अंको का होता है।

२-हूमर कबूतर को किस काम के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है?

उ-हूमर कबूतर को दुर्गम इलाकों में संदेश पहुँचाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता हैं।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१-पत्र का अपने सही पते और समय पर पहुँचना किन बातों पर निर्भर करता है?

उ-पत्र का अपने सही पते और समय पर पहुँचना उसके पिनकोड़ और ड़ाक-टिकट पर निर्भर करता हैं।

२-हरकारों का काम जोखिम से भरा होता है, कैसे?

उ-हरकारों को चिटठी की सुरक्षा करनी पड़ती थी। जंगल के रास्ते में जाते हुए जंगली जानवरों का डर और डाकू-लुटेरों का ड़र बना रहता था।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।-

१ नाम न होने पर क्या समस्या आती है?

उ-नाम न होने पर यह पता करना कठिन होता है कि पत्र किसका है। एक ही नाम के कई लोग होते हैं।जिससे यह पता करना बहुत मुश्किल होता था कि पत्र कहा का है और किसे देना है।

२ हूमर कबूतर अपनी किन विशेषताओं के कारण प्रसिदध हैं?

उ- हूमर कबूतर जिसे प्रशिक्षित करके ड़ाक-संदेश भेजने के काम में लाया जाता है।उड़ीसा पुलिस खास तौर पर हूमर कबूतरों का इस्तेमाल राज्य के कई दुर्गम इलाकों में संदेश पहुँचाने के लिए कर रही है।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : प्रत्येक स्थान को पिनकोड प्राप्त नही होता। (सही)

२ : पिनकोड न लिखे जाने पर पत्र पहुचने मे देरी नही होती । (गलत)

३ : पुराने जमाने मे हरकारे पैदल चलकर चिट्ठियाँ पहुचाते थे। (सही)

४ : पिनकोड की शुरुआत 15 अगस्त 1972 को हुई। (गलत)

५ : हमारे देश मे सभी कस्बे/शहर/गाँव के नाम भिन्न है। (सही)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : पत्र का पता लिखने मे सबसे छोटी **भौगोलिक** इकाई से बडी की ओर बढा जाता है।

२ : पिनकोड मे प्रत्येक अंक का एक खास **स्थानिक** अर्थ होता है।

३ : कानून ळ व्यवस्था ,संकट व अनय मौको पर **संदेश** के लिए कबूतर बहुत उपयोगी होते है।

व्याकरण विभाग

क्रिया

जिन शब्दो से किसी कार्य के करने का या होने का पता चले, उन्हे क्रिया कहते है।

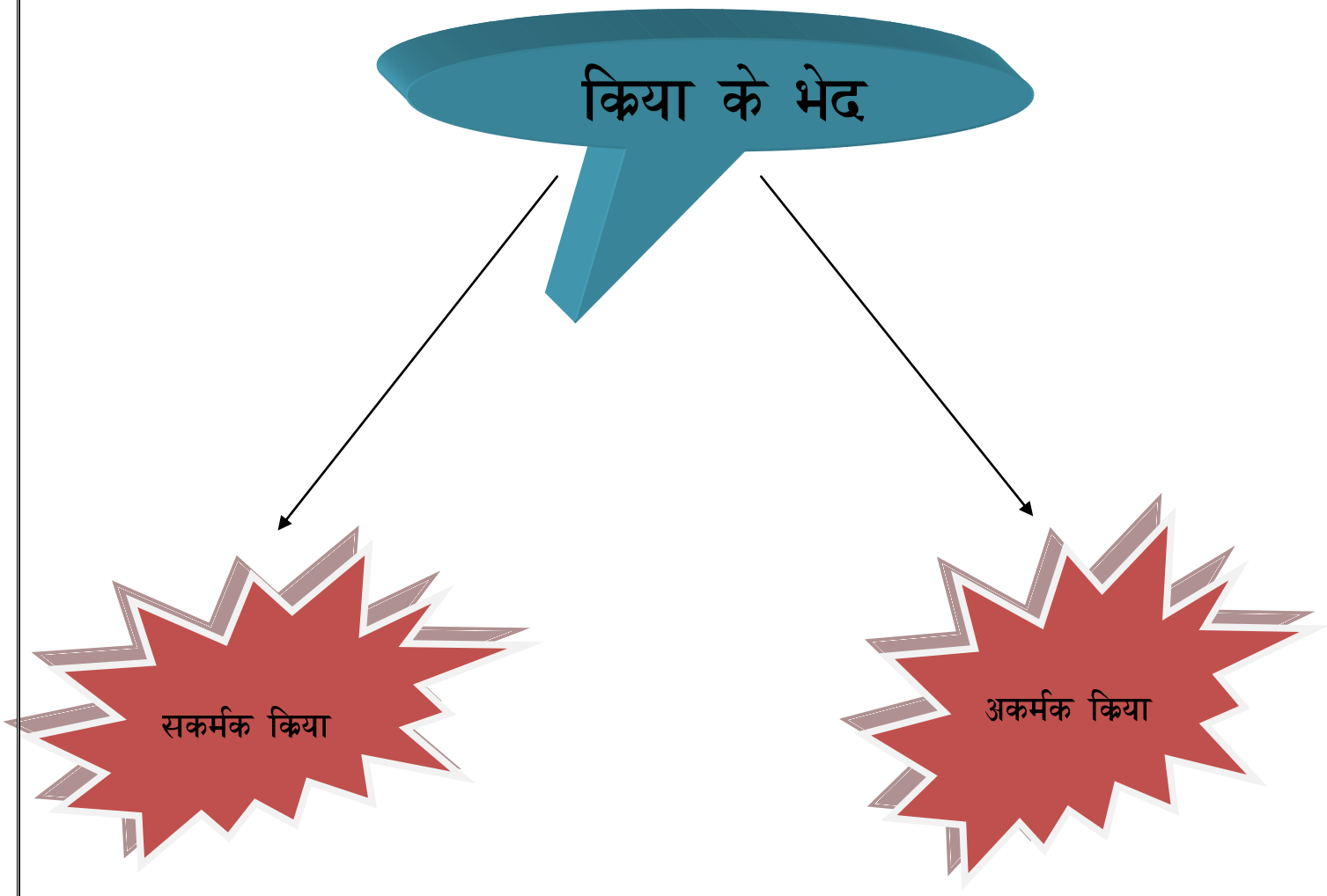

सकर्मक क्रिया : स +कर्म के साथ ।जिन क्रियाओँ के साथ कर्म लगा हो और किंया का फल कर्ता पर न पडकर कर्म पर पड़े, उन्हे सकर्मक क्रिया कहते है।

उदाहरण :

- अध्यापिका पाठ **पढ़ाएगी**।
- माली ने पौधौ को **सीचा**।
- राजा फल **खाता** है।
- राम पुस्तक **पढ़ता** है।
- गाय घास **खाती** है।

अकर्मक क्रिया : अ +कर्म अर्थात कर्म रहित अथवा कर्म के बिना । जिन किंयाओ के साथ कर्म न लगा हो तथा क्रिया का फल कर्ता पर ही पडे, उन्हे अकर्मक क्रिया कहते है।

उदाहरण :

- आकाश मे पक्षी उड़ रहे है।
- विनय जोर से चिल्ला रहा है।
- गीता दौडती है।
- नदी बहती है।
- मोर नाचता है।

लेखन विभाग

रक्षाबंधन

- रक्षाबंधन हिन्दुओं का प्रमुख पर्व है।
- यह त्योहार भाई-बहन के प वत्र प्रेम का प्रतीक है।
- इस दिन बहने अपने भाइयों की कलाई पर राखी बाँधती हैं और अपने भाई की लंबी आयु की कामना करती हैं।
- भाई अपनी बहन को उसकी रक्षा का वचन देता है।
- यह राखी का त्योहार संपूर्ण भारतवर्ष में मनाया जाता है।
- हम यह पर्व सदियों से मनाते चले आ रहे हैं।
- आजकल इस त्योहार पर बहनें अपने भाई के घर राखी और मठाइयाँ ले जाती हैं।
- भाई राखी बाँधने के पश्चात् अपनी बहन को द क्षणा स्वरूप रुपए देते हैं या कुछ उपहार देते हैं।
- इस प्रकार आदान-प्रदान से भाई-बहन के मध्य प्यार और प्रगाढ़ होता है।
- रक्षाबंधन अर्थात् संरक्षण का एक अनूठा रिश्ता, जिसमें बहनें अपने भाइयों को राखी का धागा बाँधती है,
- मत्रता की भावना से भी यह धागा बाँधा जाता है, जिसे हम दोस्ती का धागा भी कहते हैं।
- यह नाम तो अंग्रेज़ी में अभी रखा गया है, ले कन रक्षा बंधन तो पहले से ही था, यह रक्षा का एक रिश्ता है।
- इस लए, रक्षा बंधन ऐसा त्यौहार है, जब सभी बहनें अपने भाइयों के घर जाती हैं, और अपने भाइयों को राखी बांधती हैं, और कहती हैं मैं तुम्हारी रक्षा करूंगी और तुम मेरी रक्षा करो"।"
- और ये कोई ज़रूरी नहीं है, क वे उनके अपने सगे भाई ही हों, वह अन्य कसी को भी राखी बाँधकर बहन का रिश्ता निभाती हैं।
- तो ये प्रथा इस देश में काफी प्रच लत है, और ये श्रावण पू र्णमा का बहुत बड़ा त्यौहार है।
- आज ही के दिन यज्ञोपवीत बदला जाता है।
- क्षाबंधन पर राखी बांधने की हमारी सदियों पुरानी परंपरा रही है।
- प्रत्येक पू र्णमा कसी न कसी उत्सव के लए सम र्पत है।
- सबसे महत्वपूर्ण है क आप जीवन का उत्सव मनाये।
- सभी भाईयों और बहनों को एक दूसरे के प्रति प्रेम और कर्तव्य का पालन और रक्षा का दायित्व लेते हुए ढेर सारी शुभकामना के साथ रक्षाबंधन का त्योहार मनाना चाहिए।

प्रवृत्तिः ड़ाक-टिकट एकत्र करके लगाओ।

पाठ : ७

डाकिए की कहानी, कँवरसिहँ की ज़ुबानी

पाठ का सार : शमला के मालरोड पर स्थिति जनरल पोस्ट ऑ फस के एक कमरे में डाक छाँटने का काम चल रहा है। सुबह के 11:30 बजे हैं। डाक छाँटने का काम दो पैकर और तीन महिला डा कया कर रहे हैं। वहीं पर वराजमान हैं कँवर संह, जिन्हें भारत सरकार से पुरस्कार मल चुका है। हमारी ले खका प्रतीमा शर्मा ने उनसे बातचीत की जिसे संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है-

कँवर संह हिमाचल प्रदेश के शमला जिले के नेरवा गाँव के निवासी हैं। उनकी उम्र पैंतालीस साल है। उनके चार बच्चे हैं–तीन लड़ कयाँ और एक लड़का। दो लड़ कयों की शादी हो चुकी है। उनके गाँव में अभी तक बस नहीं पहुँच पाती है। हिमाचल में हजारों ऐसे गाँव हैं जहाँ पैदल चलकर ही पहुँचा जा सकता है। कँवर संह के बच्चे गाँव के स्कूल में पढ़ने जाते हैं जो लगभग पाँच कलोमीटर दूर है। पहले वे भारतीय डाक सेवा में ग्रामीण डाक सेवक थे। अब वे पैकर हैं। ले खका द्वारा यह पूछने पर क उन्हें क्या-क्या करना होता है, कँवर संह ने बताया क वे चि याँ, रजिस्टरी पत्र, पार्सल, बिल, बूढ़े लोगों की पेंशन आदि छोड़ने गाँव-गाँव जाते हैं। सूचना और संदेश देने के बहुत से नए तरीके आ जाने के बावजूद गाँव में आज भी संदेश पहुँचाने का सबसे बड़ा साधन डाक ही है।

हमारे देश की डाक सेवा आज भी दुनिया में सबसे बड़ी डाक सेवा है और सबसे सस्ती भी। यह पूछने पर क क्या उन्हें अपनी नौकरी में मजा आता है; उन्होंने बताया क बेशक उन्हें अपनी नौकरी अच्छी लगती है क्यों क उन्हें मनीआर्डर पहुँचाने पर, नियुक्ति पत्र का रजिस्टरी पत्र पहुँचाने पर, पेंशन पहुंचाने पर लोगों का खुशी भरा चेहरा देखने को मलता है।

प्रारंभ में उसने लाहौल स्पीति जिले के कब्बर गाँव में तीन साल नौकरी की इसके बाद पाँच साल तक इसी जिले के काज़ा में और पाँच साल तक कन्नौर जिले में नौकरी की। गाँवों में डाकसेवक का बहुत मान कया जाता है। पहाड़ी इलाकों में डाक पहुँचाना काफी मुश्किल काम है कन्नौर और लाहौल स्पीति हिमाचल प्रदेश के बहुत ठंडे तथा ऊँचे जिले हैं। इन जिलों में उसे एक घर से दूसरे घर तक डाक पहुँचाने के लए लगभग 26 कलोमीटर रोज़ाना चलना पड़ता था। कँवर संह अभी पैकर हैं। डा कया बनने के लए एक इम्तिहान पास करना पड़ता है। फलहाल पैकर के काम के हिसाब से उनका वेतन काफी कम है। सारा दिन कुर्सी पर बैठकर काम करने वाले बाबू का वेतन कहीं ज्यादा है। डा कयों पर काम का बोझ बहुत ज्यादा रहता है।जब ले खका ने कँवर संह से पूछा क काम के दौरान क्या कभी कोई खास बात हुई है, तो उसने एक घटना सुनाना शुरू कर दिया, जो इस प्रकार है

"तब मेरा तबादला शमला के जनरल पोस्ट ऑ फस में हो गया था। वहाँ मुझे रात के समय रेस्ट हाउस और पोस्ट ऑ फस चौकीदारी का काम दिया गया था। यह 29 जनवरी 1998 की बात है। रात लगभग साढ़े दस बजे का समय था। कसी ने दरवाजा खटखटाया। खोलने पर पाँच-छह लोग अंदर घुस आए और मुझे पीटना शुरू कर दिए। मेरा सर फट गया और मैं बेहोश हो गया। अगले दिन जब मुझे होश आया तो मैं शमला के इंदिरा गाँधी मे डकल कॉलेज के अस्पताल में दा खल था। मेरे सर पर कई टाँके लगे थे। उसकी वजह से आज भी मेरी एक आँख से दिखाई नहीं देता।"सरकार ने जान पर खेलकर डाक की चीजें बचाने के लए उसे 'बेस्ट पोस्टमैन' का इनाम दिया। यह इनाम 2004 में मला। इस इनाम में 500 रुपये और प्रशस्ति पत्र मला। कँवर संह को इस बात पर गर्व है क वह 'बेस्ट पोस्टमैन' है।

कठिन शब्दः

- पैकर
- इम्तिहान
- भयंकर
- प्रशस्ति
- रजिस्टरी
- जनरल
- दुनिया
- पत्र
- पोस्टमैन
- इम्तिहान

शब्दार्थः

- ज़रिया-साधन
- तबादला-स्थानान्तरण
- भयंकर-बहुत तेज
- इनाम-पुरस्कार
- प्रशस्ति पत्र-प्रशंसा के पत्र
- बेस्ट पोस्टमैन-सबसे अच्छा डा कया
- घटना–किस्सा, माज़रा
- पैकर–पैकिंग करनेवाला
- गुनगुनी–हल्की
- इम्तिहान–परीक्षा
- भयंकर–बहुत तेज़
- प्रशस्ति पत्र–तारीफ़, बड़ाई का पत्र

निम्नलिखित प्रश्नो के अतिलघु उत्तर लिखिए।

१ डाक सेवक किन-किन चीज़ो को पहुँचाने का कार्य करता है?

उ-डाक सेवक पत्र, पार्सल, रजिस्ट्रि-पत्र, बिल, पेंशन आदि गाँव-गाँव पहुँचाने का काम करता हैं।

२ पैंकर से डाकिया कैसे बना जाता है?

उ-एक इम्तिहान पास करने के बाद पैकर से डाकिया बना जाता हैं।

निम्नलिखित प्रश्नो के लघु उत्तर लिखिए।

१ कँवरसिंह और उनके परिवार के सदस्यों के बारे में बताइए।

उत्तर-कँवरसिंह ने बताया कि उनके चार बच्चे हैं, तीन बेटी, एक बेटा। दो बेटियाँ बारहवीं पास हैं और एक बेटी और बेटा दसवीं तक पढ़े हैं।एक और बेटा था जिसकी मौत पहाड़ी से फ़िसल कर हो गई थीं।

२ कँवरसिंह ने अब तक किन-किन जगहों पर डाक सेवाएँ दी हैं?

उत्तर-कँवरसिँह ने किब्बर गाँव और किन्नौर ज़िले में नौकरी की हैं।

३ स्नोबाईट किसे कहते हैं?

उत्तर-स्नोबाईट पहाड़ी इलाको में ज्यादा ठंड पड़ने पर या बर्फ में चलने पर पैर नीले हो -जाते हैं, उनमें गैंगरिन हो जाता है और पैरों की उँगलियाँ झड़ जाती हैं। इसे स्नोबाइट कहते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नो के दीर्घ उत्तर लिखिए।-

१ भारतीय डाक सेवा अन्य देशों की डाक सेवा से किस प्रकार अच्छी है?

उत्तर-हमारे देश की डाक सेवा आज भी दुनिया की सबसे बड़ी डाक सेवा है और सबसे सस्ती भी।केवल पाँच रुपए में देश के किसी भी कोने में हम चिटिठी भेज सकते हैं।

२ "ग्रामीण डाकिये की ज़िंदगी में तो चलना ही चलना है।"यह बात किसने किस संदर्भ में कही है?

उत्तर-हिमाचल में एक गाँव से दूसरे गाँव की दूरी लगभग चार या पाँच किलोमीटर तक होती है।इन्हें डाक पहुँचाने के लिए लगभग 26 किलोमीटर रोज़ाना एक गाँव से दूसरे गाँव चलकर जाना पड़ता था।इसलिए कहा गया है कि, "ग्रामीण डाकिये की जिंदगी में तो चलना ही चलना हैं।

३ उस घटना का अपने शब्दों में वर्णन कीजिए, जिसके कारण कँवरसिंह की एक आँख बेकार हो गई।

उत्तर-कँवरसिंह ने अपनी जान पर खेलकर डाकघर की चीजों को बचाया।इसमें उनके सिर पर भी कई टाँके लगे। उनकी एक आँख भी खराब हो गई।डाकघर की चीजें बचाने के लिए सरकार ने उन्हें "बैस्ट पोस्टमैन" की उपाधि दी।

सही कथन पर सही और गलत पर गलत का निशान लगाए।

१ : कँवरसिंह पैतालीस वर्ष के थे।
(सही)
२ : कँवरसिंह सबसे पहलर पैकर के पद पर नियुक्त थे।
(गलत)
३ : भारतीय डाक सेवा विश्व की सर्वाधिक बडी डाक सेवा है।
(सही)
४ : काजा हिमालय प्रदेश का सबसे ऊँचा गाँव है।
(गलत)
५ : हिमाचल मे एक गाँव दूसरे गाँव से चार-पाँच किलोमीटर दूर होता है।
(सही)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

१ : पहले मै भारतीय डाक सेवा मे **ग्रामीण डाक सेवक** था।
२ :आज भी गाँवो मे **संदेश** पहुँचाने का सबसे बड़ा माध्यम डाक ही है।
३ : रिकांगपिओ किन्नौर जिले का **मुख्यालय** है।

व्याकरण विभाग

विशेषण

विशेषणः जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है,उन्हे विशेषण कहते है।

विशेषण शब्द जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है,वे विशेष्य कहलाते है।

उदाहरणः

- नीता अच्छी लेखिका है।

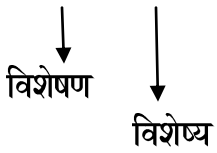

- प्रतिदिन ताजे फलों का सेवन करो।

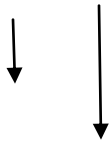

विशेषण

विशेष्य

विशेषण के मुख्य चार भेद होते है।

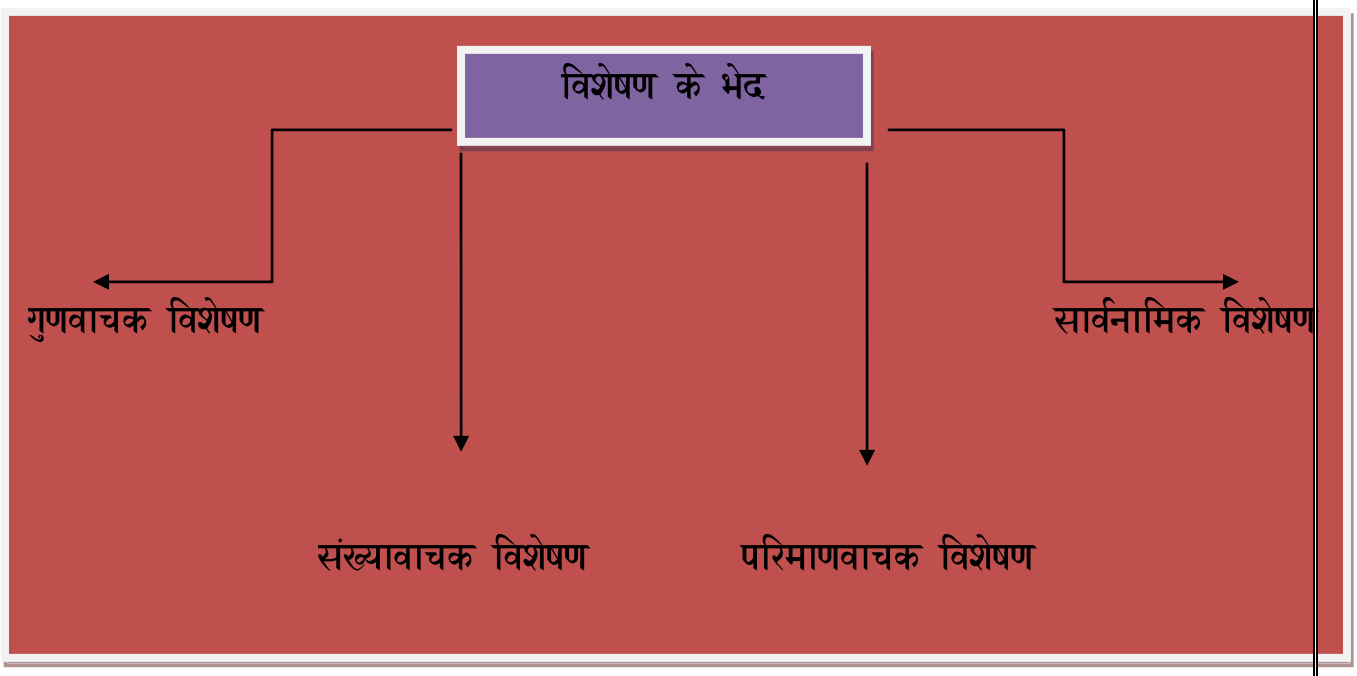

गुणवाचक विशेषण : वे विशेषण शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम शब्द के गुण-दोष, रूप-, स्वाद, दशा, अवस्था स्थान आदि का बोध कराते है, वह गुणवाचक विशेषण कहलाते है।

उदाहरण :

- गीता अच्छी लडकी है।
- यह खेत चौकोर है।
- बाहरी कमरा छोटा है।
- भरत बलशाली बालक था।

संख्यावाचक विशेषण : वे विशेषण शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराते है, वह संख्यावाचक विशेषण कहलाते है।

उदाहरण :

- तीन लडके खेल रहे है।

- मेले मे हजारो लोग आए थे।

परिमाणवाचक विशेषण : जिन विशेषण शब्दो से किसी वस्तु के माप-तौल संबंधी विशेषता का बोध होता है, वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते है।

उदाहरण :

- वह प्रतिदिन एक लीटर दूध पीता है।
- अधिक परिश्रम करने से स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

सार्वनामिक विशेषण : जिन सर्वनाम शब्दो का प्रयोग संज्ञा के आगे उनके विशेषण के रूप मे होता है, उन्हे

सार्वनामिक विशेषण कहते है।

उदाहरण :

- हमारा घर आंनद विहार मे है।
- यह घड़ी पुरानी है।
- यह खेत बहुत छोटा है।

लेखन विभाग

पत्र लेखन

अनौपचारिक पत्र लेखन :छोटे भाई को फिजूलखर्ची से बचने की सलाह देते हुए पत्र लिखिए।

सुभाष अपार्टमेन्ट

झुडाल

गाँधीनगर

दिनांकः11/8/2021

प्रिय आशुतोष

सदा प्रसन्न रहो,

कल ही मुझे माँ का पत्र मिला, जिसको पढकर मुझे यह पता चला कि तुम आजकल बहुत फिजूलखर्ची करने लगे हो।तुम आए दिन चाट-पकौडी खाने बाहर जाते हो और इधर की चीजे खरीदने मे पैसे व्यर्थ खर्च करते हो।

तुम यह तो जानते ही हो कि पिताजी ने कितना कठिन परिश्रम करके धन कमाते है।तुम्हारी इस फिज़ूलखर्ची से न केवल उनके धन की हानि होगी, बलिक तुम्हारा स्वास्थय भी खराब हो जाएगा।इसलिए मेरे भाई अपनी यह फिज़ूलखर्ची की आदत छोड दो और पढ़ाई तथा खेल-कूद मे मन लगाओ।यही तुम्हारे भविष्य के लिए उत्तम है।

आशा है, तुम मेरी सलाह अवश्य मानोगे।

तुम्हारा बड़ा/बडी भाई/बहन

अपना नामं

प्रवृत्तिः ड़ाकिया का चित्र बनाओ अथवा चिपकाओ।